

आ इतिहासनें ठानेन मिहानेन्या, सूर पुरुषांच्या, राजकारस्थानांचे कोणे
या हकीकतीकळून त्यांमार्गे आपण नाही असें पाहून इतिहास
इतिहासाच्या एखाद्या तरी मनुष्यास. फार लक्ष्मण केलें व त्या
जोगाने तो स्वतः त्यांमार्गे आचरण करतो व तो कांहींही निष्कर्ष काढू
सांगतो. आतां केवळ भिन्न साचे हिं कोकः, थोड्याच काळापासून त्या
च कांहीं त्यांचे ऐकतात असें नाही परंतु त्यांच्या विषयक त्यांच्या लक्षात
आले कांहीं तरी लोक असतात. म्हणूनच हल्लीं हल्लीं हल्लीं हल्लीं
क मंडळ इत्यादि मंडळें निघाती आहेत. व त्यांनीं पुढील विषय इतिहास
सावरून पुरातन काळीन काळीन इत्यादीं तुडूक काढून मंडळात
येथें काढले कीं पुढाकें, व रवरी इत्यादि कालावध्यांत मंडळांत
विलें आहे व त्यामुळे हल्लीं बरीच मंडळी इतिहास विलक्षण
कालावधी आहेत. देवाच्या ऊर्जेला व त्याच्या अर्थस्थानाच्या
नाचनें हे व त्यांच्या अंशी कारण आहे. किनाजी, लानाजी, नावाय अशी
सा इत्यादि कवी व मुसद्दी पुरुषांनीं स्वराज्यां काढितां हल्लीं
नवें आपल्या जातीचे हाक होताना म्हणून. अतिशय कोस
मां आलाकडून माणव्य जालिले. ज्यांनीं सूर वाने अतिशय

कांवा इत्यादि कारण करितो आपल्या जीवनाचे सुद्धा आपण
मीं दिली त्या थोर पुरुषांची चरिते वाचून आपल्या सनंदाच्या
हीच कां परिणाम होणार नाही. काहीं ठिकाणीं नासें लिहिलें आहे कीं
किनाजीकर किहितं, वाचलां सुद्धा येत नव्हते. तोंवरें असो किनावासो
परंतु रामायण, महाभारत इत्यादि कांतीक वीरांच्या गोष्टी ऐकून
व आपल्या भारतभूचे म्हणजेच त्यांनीं तीं को कांचे आती विकाय
ऐकून आपण गोमालेचे हृदयश्रवक अलाप अवणकसून, आपल्या जीव
वाची देखीक पखांन करतो ज्यांनीं या आपल्या भारतभूला, गोमाले
ला व वनांच्या तारांतून सोडविलें, यांच्या गोष्टी ऐकून, वाचून सुद्धा
धडधडीत आपल्या हातांनीं गोमालेला बाजारांत कसबाच्या हाती देणार
दे किली तरी लोक या समाजाला दिसत आहेत परंतु त्यांच्या कीं आपल्या
का लून कांहीं केलीं नव्हती परंतु त्यांच्या मनावर पुरातन गोष्टींचा कांहीत
परिणाम झाला आहे त्यांच्या हातून गोरक्षण इत्यादि संस्थांनीं झाले
थे लच आहे. असो. असेंच उत्तरोत्तर इतिहास वाचनामुळे, गोमालेला, वतसेंच
मिमीय्या तांब्यापून सोडविण्याचे तेज कांही तरी लोकांच्या अंगामध्ये संवेदन
मयूर व वरणी प्रायना कसून हा निबंध पुरा करतो.

दत्तात्रय धुंडिराज कवीश्वर.

श्रीगणेशाय नमः

विषयः- मातृभक्ति अर्थ प्रायदे उपसंहार

1871

Handwritten: ...

१५५५

Division of Agriculture, 1914

אשר יצאנו ממצרים

1891

1706-1707-1708-1709-1710-1711-1712-1713-1714-1715-1716-1717-1718-1719-1720-1721-1722-1723-1724-1725-1726-1727-1728-1729-1730-1731-1732-1733-1734-1735-1736-1737-1738-1739-1740-1741-1742-1743-1744-1745-1746-1747-1748-1749-1750-1751-1752-1753-1754-1755-1756-1757-1758-1759-1760-1761-1762-1763-1764-1765-1766-1767-1768-1769-1770-1771-1772-1773-1774-1775-1776-1777-1778-1779-1780-1781-1782-1783-1784-1785-1786-1787-1788-1789-1790-1791-1792-1793-1794-1795-1796-1797-1798-1799-1800-1801-1802-1803-1804-1805-1806-1807-1808-1809-1810-1811-1812-1813-1814-1815-1816-1817-1818-1819-1820-1821-1822-1823-1824-1825-1826-1827-1828-1829-1830-1831-1832-1833-1834-1835-1836-1837-1838-1839-1840-1841-1842-1843-1844-1845-1846-1847-1848-1849-1850-1851-1852-1853-1854-1855-1856-1857-1858-1859-1860-1861-1862-1863-1864-1865-1866-1867-1868-1869-1870-1871-1872-1873-1874-1875-1876-1877-1878-1879-1880-1881-1882-1883-1884-1885-1886-1887-1888-1889-1890-1891-1892-1893-1894-1895-1896-1897-1898-1899-1900-1901-1902-1903-1904-1905-1906-1907-1908-1909-1910-1911-1912-1913-1914-1915-1916-1917-1918-1919-1920-1921-1922-1923-1924-1925-1926-1927-1928-1929-1930-1931-1932-1933-1934-1935-1936-1937-1938-1939-1940-1941-1942-1943-1944-1945-1946-1947-1948-1949-1950-1951-1952-1953-1954-1955-1956-1957-1958-1959-1960-1961-1962-1963-1964-1965-1966-1967-1968-1969-1970-1971-1972-1973-1974-1975-1976-1977-1978-1979-1980-1981-1982-1983-1984-1985-1986-1987-1988-1989-1990-1991-1992-1993-1994-1995-1996-1997-1998-1999-2000-2001-2002-2003-2004-2005-2006-2007-2008-2009-2010-2011-2012-2013-2014-2015-2016-2017-2018-2019-2020-2021-2022-2023-2024-2025-2026-2027-2028-2029-2030-2031-2032-2033-2034-2035-2036-2037-2038-2039-2040-2041-2042-2043-2044-2045-2046-2047-2048-2049-2050-2051-2052-2053-2054-2055-2056-2057-2058-2059-2060-2061-2062-2063-2064-2065-2066-2067-2068-2069-2070-2071-2072-2073-2074-2075-2076-2077-2078-2079-2080-2081-2082-2083-2084-2085-2086-2087-2088-2089-2090-2091-2092-2093-2094-2095-2096-2097-2098-2099-2100-2101-2102-2103-2104-2105-2106-2107-2108-2109-2110-2111-2112-2113-2114-2115-2116-2117-2118-2119-2120-2121-2122-2123-2124-2125-2126-2127-2128-2129-2130-2131-2132-2133-2134-2135-2136-2137-2138-2139-2140-2141-2142-2143-2144-2145-2146-2147-2148-2149-2150-2151-2152-2153-2154-2155-2156-2157-2158-2159-2160-2161-2162-2163-2164-2165-2166-2167-2168-2169-2170-2171-2172-2173-2174-2175-2176-2177-2178-2179-2180-2181-2182-2183-2184-2185-2186-2187-2188-2189-2190-2191-2192-2193-2194-2195-2196-2197-2198-2199-2200-2201-2202-2203-2204-2205-2206-2207-2208-2209-2210-2211-2212-2213-2214-2215-2216-2217-2218-2219-2220-2221-2222-2223-2224-2225-2226-2227-2228-2229-2230-2231-2232-2233-2234-2235-2236-2237-2238-2239-2240-2241-2242-2243-2244-2245-2246-2247-2248-2249-2250-2251-2252-2253-2254-2255-2256-2257-2258-2259-2260-2261-2262-2263-2264-2265-2266-2267-2268-2269-2270-2271-2272-2273-2274-2275-2276-2277-2278-2279-2280-2281-2282-2283-2284-2285-2286-2287-2288-2289-2290-2291-2292-2293-2294-2295-2296-2297-2298-2299-2300-2301-2302-2303-2304-2305-2306-2307-2308-2309-2310-2311-2312-2313-2314-2315-2316-2317-2318-2319-2320-2321-2322-2323-2324-2325-2326-2327-2328-2329-2330-2331-2332-2333-2334-2335-2336-2337-2338-2339-2340-2341-2342-2343-2344-2345-2346-2347-2348-2349-2350-2351-2352-2353-2354-2355-2356-2357-2358-2359-2360-2361-2362-2363-2364-2365-2366-2367-2368-2369-2370-2371-2372-2373-2374-2375-2376-2377-2378-2379-2380-2381-2382-2383-2384-2385-2386-2387-2388-2389-2390-2391-2392-2393-2394-2395-2396-2397-2398-2399-2400-2401-2402-2403-2404-2405-2406-2407-2408-2409-2410-2411-2412-2413-2414-2415-2416-2417-2418-2419-2420-2421-2422-2423-2424-2425-2426-2427-2428-2429-2430-2431-2432-2433-2434-2435-2436-2437-2438-2439-2440-2441-2442-2443-2444-2445-2446-2447-2448-2449-2450-2451-2452-2453-2454-2455-2456-2457-2458-2459-2460-2461-2462-2463-2464-2465-2466-2467-2468-2469-2470-2471-2472-2473-2474-2475-2476-2477-2478-2479-2480-2481-2482-2483-2484-2485-2486-2487-2488-2489-2490-2491-2492-2493-2494-2495-2496-2497-2498-2499-2500-2501-2502-2503-2504-2505-2506-2507-2508-2509-2510-2511-2512-2513-2514-2515-2516-2517-2518-2519-2520-2521-2522-2523-2524

ה'תשנ"ב י"ב כסלו

1890-1891

Handwritten: 1870-1871

133

1787

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1875

... 6 ...

... ..

~~SECRET~~

1950-1951

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[Faint handwritten notes at the bottom of the page]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

[illegible]

1871

1913

1875

॥ श्रीगणेशादत्तगुरुभ्योनमः ॥

. ११

विषयः-लेखन अर्थ फायदे उपसंहार.